(लास्ट टाइम)

धनी के लाड़ले सुन्दर साथ प्रणाम जी

सुन्दर साथ जी आज का विषय है लास्ट टाइम यह शब्द बड़ी देर से सुनते आ रहे हैं कि ब्रह्माण्ड का लास्ट टाइम, फिर तो जाना ही है लेकिन वो लास्ट टाइम कब आयेगा? सुन्दर साथ के दिमाग में भी ये ख्याल बार-बार आ रहा है कि सरकार श्री चर्चा में कहते थे कि ये ब्रह्माण्ड का लास्ट टाइम है अब तो बस धाम चलना है लेकिन सरकार श्री की इन बातों के पीछे तो कुछ गहरा राज था पर हम अनुमान लगाते थे कि सरकार श्री के इसी तन के साथ ब्रह्माण्ड का भी लय हो जाना है परन्तु ऐसी धारणा गलत थी।

आज हम वाणी के हिसाब से समझे कि ये लास्ट टाइम है क्या? हमने यह समझना है कि हमारा सम्बन्ध रूप से है या स्वरूप से है। जिन सुन्दरसाथ ने सरकार श्री को पहचाना उनकी तो सोच यह है कि अब ब्रह्माण्ड का प्रलय नजदीक है लेकिन महाप्रलय और धाम चलने का दिन तो वो ही बता सकते हैं जिन सुन्दर साथजी ने सरकार श्री की पहचान की, उनके स्वरूप की पहचान करने वालों को पता है कि महाप्रलय कब होनी है।

इस लास्ट टाइम में जितनी परम धाम की बातें कहनी थी वह कह दी। परमधाम के जर्रे जर्रे का वर्णन कर दिया हमारी परआत्मा को मूल मिलावे में उठाने की कोशिश भी की लेकिन हमसे हिम्मत न हुई ना उठने का कारण था हमारा मोहमाया रिश्तेदारी में गरक होना। राजी ने तो अपनी पहचान खुद आकर करा दी ओर अब जब राजी के दिल को जान लिया तो बाकी बचा ही क्या किसी के दिल की बात अगर कोई जान लेता है तो वे एक दूसरे के अरस परस हो जाता है इसी प्रकार यहाँ माया में रह कर रुहें श्री जी से अरस परस हो गयी हैं परन्तु अभी भी कुछ रूहें अपनी निसबत में शक ला रही हैं या यूँ कहिए कि अपनी निसबत से अन्जान हैं। सरकार श्री तो हमेशा चर्चा में कहते थे सुन्दर साथ जी रूप को मत देखो स्वरूप की पहचान करो। स्वरूप की पहचान करने वालों के दिल में संशय नही रहता। सरकार श्री का कथन था कि लास्ट टाइम तो है लेकिन अभी भी वक्त है पहचानों भी वक्त का यह मतलब नही है कि टाइम कितना है। ये तो राजी महाराज की मौज है जब चाहेंगें ले चलेगें।

इस ब्रह्माण्ड की बात ले लो जब कोई पति पत्नी इक्ट्ठे अपने घर में रह रहे होते हैं तो किसी दिन किसी बात पर उनमे आनाकानी हो जाती है तो पत्नी अपने पति से कहती है कि मै मायके चली जाऊँगी तो पति कहता है कि चले तो जाना लेकिन हमारे बिना तुम्हारा दिल नही

Nijanand App

लगेगा लेकिन पत्नी अपनी जिद पर अड़ अपने पति को छोड़कर अपने मायके आ जाती है। वहाँ आकर एक बार तो अपने भाई बहन, माता पिता, रिश्तेदारों से मिलकर इतना खुश होती है कि इतना भी भूल जाती है कि मै अपने पति को छोड़ कर आई हूँ लेकिन अगले दिन पति कोई फोन या संदेशा भेजता है तो वह इन सब message को ignore करती है लेकिन जैसे ही एक महीना बीतने लगता है उसे अपने पति की याद सताने लगती है। वैसे भी जितना सुख उसको पति दे सकता था कोई और इतना नही दे सकता चाहे वह माता पिता ही क्यों न हो तो वह पल पल अपने पिया को याद करती है। उसके पत्र पढ़ कर बिलखती है लेकिन कर कुछ भी नही सकती है क्योंकि अब तो उसके पिया की मर्जी होगी जब वो चाहेंगे-लेजायेगे वैसे ही हमें भी पिया के पत्र (वाणी) में गरक होना चाहिए जब राजी चाहेगे ले चलेगें वैसे श्री राजी महराज वापिस चलने की तैयारी में लगे हुए है राजजी से भी अपनी बिलखती हुई रूहो को देखा नही जाता कुछ रूहे राजीके बिछोड़े में तड़प रही है तो कुछ माया की मार में तड़प रही है लेकिन इन दोनो तड़प में दुख तो राजी महराज जी को होता है। अब तो सभी की एक ही इच्छा है परमधाम वापिस चलने की। जिस बैठक में हम सब रूहे एक रूप होकर बैठी है वजूद अलग होने पर भी सबका एक स्वरूप, एक चाहत है इश्क की। जो यहाँ कर भूल गया उसे अब याद करना है किस तरह धाम में श्री राजी महराज नूरी स्वरूप हम सब रूहो को ये मेहर का खेल दिखा रहे है ।

तख्त बीच नूर का, नूर में युगल किशोर ।
बैठक हक बड़ी रूह नूर में, नूर शोभा अति जोर।।

अगर हर पल हमारी सूरत धनी के चरणों में रहे उस मूल मिलावे को याद करे तो उनकी चितवन में रूह को आराम मिलता है। धनी ने अपनी अँगना जान कर यह वाणी बक्शी है। इसी के द्वारा धनी की पहचान करो। यहीं बैठ कर पल पल के सुखों को लेना कि जो कोई रूह अर्स परमधाम से आई है खेल मे आकर भूल गयी है वह इस नूरमयी बैठक में बिराजे श्याम श्यामा के चरणों की तरफ ध्यान करके अपने धाम पहुँच सकती है।

महामति कहें अरवाह अर्स की, जो कोई आई हो उतर ।
सो इन स्वरूप के चरण लेके, चलिए अपने घर।।

प्रणाम जी

(दीपक निजानन्दी-फाज़िल्का)

Nijanand App